श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, बड़ीसादड़ी

यह शिखरबंद मंदिर चित्तौड़गढ़ जिले के बड़ीसादड़ी नगर में राजमहल के पास है। बड़ीसादड़ी चित्तौड़गढ़ से 80 किलोमीटर व उदयपुर से 95 किलोमीटर दूर स्थित है। यह मावली रेल्वे लाईन का अंतिम रेल्वे स्टेशन है। इस नगर का नाम इतिहास के पन्ने पर अंकित है नगर करीब 1000 वर्ष प्राचीन है, महाराणा रायमल ने वि. की चौदहवीं शताब्दी में हलवद (काठियावाड़) के अज्जाजी जो मेवाड़ में आए, उनकी वीरता से प्रसन्न होकर बड़ीसादड़ी की जागीरी सुपुर्द की, यह प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है। महाराणा प्रताप जब हल्दीघाटी के युद्ध में कठिनाई में आ गये थे, उस समय बड़ीसादड़ी के ही झाला मानसिंह ने अपने प्राण देकर महाराणा प्रताप को बचाया। यह बलिदानकर्ता भी शासन का ही अंग था।

मंदिर भी करीब सं. 1600 का निर्मित है। समय व प्राकृतिक आपदाओं से क्षति हुई तदुपरान्त 150 वर्ष पूर्व कोठारी परिवार ने मंदिर सम्पूर्ण कर शासक को सुपुर्द किया। शासक ने जैन समाज को बुलाकर सुपुर्द किया । उसी समय 20 (बीसा) व 10 (दशा) ओसवाल दोनों ही परिवार थे। दशा ओसवाल (छोटा साजन) कहा जाने लगा। मंदिर का पट्टा राजराणा द्वारा दिया गया । उपलब्ध नहीं है, तलाश की जानी है।

मंदिर एक ही रेखा में तीन भागों में (एक ही परिसर) विभाजित है और तीनों पर अलग–अलग शिखर हैं।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं – केन्द्र में (बीच में) :

1. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 29'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1931 शाके 1796 का लेख है।

2. श्री जिनेश्वर भगवान की (मल्लीनाथ) (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
3. श्री जिनेश्वर भगवान की (नेमिनाथ) (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र (धातु की) :

1. श्री कुंथुनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1525 वै. सु. 6 का लेख है।
2. श्री मुनिसुव्रत भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2030 फा. वदि 6 गुरूवार का लेख है।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर अपठनीय लेख है।
4. श्री आदिनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1536 वै. सु. 2 का लेख है।
5. श्री सिद्धचक्र यंत्र 6'' का गोलाकार है। इस पर लेख नहीं है।
6. श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.5'' का गोलाकार है। इस पर सं. 2048 चैत्रवदि 3 का लेख है।
7. श्री सिद्धचक्र 4.5'' का गोलाकार हैं। इस पर लेख नहीं है।
8. बीस स्थानक यंत्र गोलाकार मय स्टेण्ड के 10'' ऊँचा है।
9. श्री पद्मावती देवी की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं॰ 1219 का लेख है।

वेदी की दीवार के बीच आलिए में प्रासाद देवी 6'' ऊँची प्रतिमा स्थापित है।

मूलवेदी के बांई ओर वेदी पर :

1. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 फाल्गुन सुदि 13 का लेख है।

2. श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 का लेख है।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। श्री जितेन्द्रसूरि जी द्वारा प्रतिष्ठित का लेख है।

वेदी की दीवार के बीच आलिए में प्रासाद देवी की 6'' ऊँची प्रतिमा स्थापित है।

आगे – श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची पूर्वामुखी प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

मूलवेदी के दांई ओर वेदी पर :

1. श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर श्री जितेन्द्रसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित का लेख है।
2. श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।
3. श्री कुंथुनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 का लेख है।

वेदी की दीवार के बीच आलिए में प्रासाद देवी की श्वेत पाषाण की 6'' ऊँची प्रतिमा है।

आगे – श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची पश्चिमोंमुखी प्रतिमा स्थापित है।

बाहर – सभामण्डप (बरामदा) में अलग – अलग आलिओं में :

1. श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।
3. इसी आलिए में श्री नाकोड़ा भैरव की धातु की 7'' ऊँची उत्थापित प्रतिमा है।

4. श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है।

5–9 श्री अधिष्ठायक देव, भिन्न–भिन्न नाम से कहे जाने वाले–तापेश, माणिभद्र, अम्बाजी, भोमिया जी भैरव की 13'', 16'',18'', 7'', 6'' ऊँची प्रतीक मूर्तियॉ स्थापित हैं।

दो पाषाणी पट्ट शत्रुजंय व सम्मेद शिखर जी के दीवार पर बने है, रंग होना शेष है। ये दोनो पट्ट सं. 2021 के निर्मित हैं।

भण्डार पर दो यंत्र (ताम्बे के) :

1. श्री ऋषिमण्डल यंत्र गोलाकार 11'' का है।
2. श्री पार्श्वनाथ का यंत्र चोकोर 7'' x 7'' का है।

तीनों शिखर पर पांच मंगल मूर्तियां स्थापित हैं।

एक पाषाणीय शिलालेख है, पेन्ट करने से अपठनीय रहा, प्रयास किया जायेगा।

मंदिर का जीर्णोद्धार संवत् 1920 में हुआ तदुपरान्त सं. 2056 में जीर्णोद्धार हुआ। **वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 3 को चढ़ाई जाती है।**

मंदिर की देखरेख समाज के सदस्य द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : श्री गणेशलाल जी दलाल (पूर्व मंत्री)
मोबाइल : 94134 59559, फोन 01473-264163
श्री देवेन्द्र जी मेहता, (पूर्व कोषाध्यक्ष)
मोबाइल : 99292 16124

एक 'भगवान' की पहचान के लिए
कितनी सारी पुस्तकें लिखी गई हैं।
'भगवान' तो आपके पास ही हैं।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, निकुम्भ

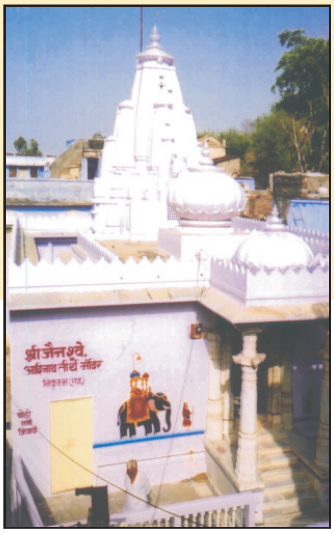

यह शिखरबंद मंदिर मंगलवाड़ चौराहा व निम्बाहेड़ा से 20 किलोमीटर दूर है। जानकार सूत्रों के अनुसार ग्राम के बसने के साथ - साथ ही मंदिर की स्थापना हुई। पूर्व में यह मंदिर छोटा था। उल्लेखानुसार मंदिर संवत् 1700 है। प्रतिमाओं के आधार पर भी करीब 350 वर्ष प्राचीन है जो सत्यता के लगभग प्रतीत होता है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 37'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर संवत् 1704 वै.शु. 13 का लेख है।
2. श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2042 वैशाख शुक्ला 4 का लेख है।
3. श्री चंद्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1811 का लेख है।

वेदी की दीवार के मध्य प्रासाद देवी की श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

धातु की प्रतिमाएँ व यंत्र :

1. श्री जिनेश्वर भगवान की चतुर्विंशति 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2043 का लेख है।
2. श्री सिद्धचक्र यंत्र 5.5'' x 5.5'' का है। इस पर संवत् 2000 का लेख है।
3. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' है। इस पर संवत् 2043 का लेख है।
4. श्री अष्टमंगल 4.5'' x 2''यंत्र का है। इस पर संवत् 2060 का लेख है।

5. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' का है। इस पर संवत् 2043 का लेख है।
6. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है।
7. श्री गोमुख यक्ष की (दाई ओर) श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2042 का लेख है।
8. श्री चक्रेश्वरी देवी की (बाई ओर) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2042 का लेख है।
9. श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2042 का लेख है।
10. श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2042 का लेख है।

सभामण्डप में ही निम्न चित्रपट्ट बने हैं :

1. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ
2. ऋषभप्रभु के पारणा का
3. श्री नंदीश्वर
4. श्री सिद्धचक्र
5. श्री गिरनार
6. श्री आगम मंदिर
7. श्री शत्रुंजय
8. श्री अष्टापद
9. श्री तारंगा
10. श्री पांवापुरी

मंदिर के साथ कृषि भूमि है जो पुजारी के पास है। उपाश्रय मंदिर के सामने है। वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 4 को चढ़ाई जाती है।

देखरेख समाज की ओर से निम्न सदस्य देख रहे हैं :

1. **श्री सुजानमल जी, नानालाल जी, फोन : 01473-242362**
2. **श्री हिम्मत जी, फोन : 01473-242256**